PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

स्वतंत्रता की ओर

Author: Subhadra Sen Gupta
Illustrator: Tapas Guha
Translator: Manisha Chaudhry

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ!" धनी मन-ही-मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता, बड़ी ख़ास जगह में रहते थे। अहमदाबाद के पास, महात्मा गाँधी के साबरमति आश्रम में-जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गाँधी जी की तरह, वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गाँधी जी के व्याख्यान सुनते।

साबरमति में सबको कोई न कोई काम करना होता-खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था-बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसन्द था क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

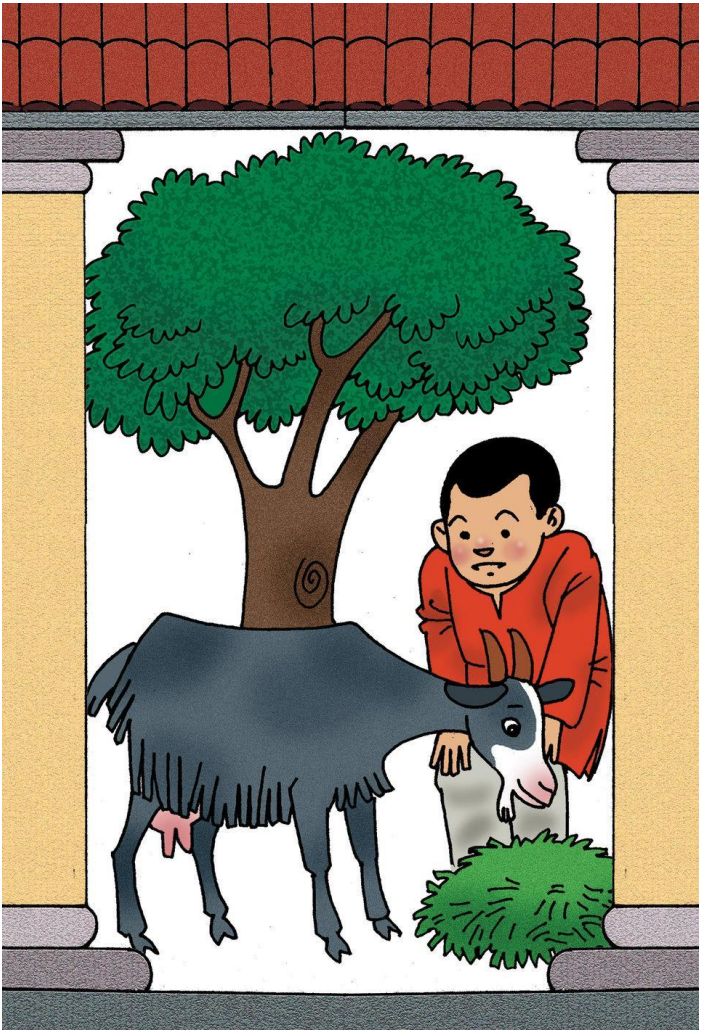

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए बोला, “कोई बात ज़रूर है बिन्नी! वे सब गाँधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।“

बिन्नी ने घास चबाते हुए सर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही थी।

धनी को भूख लगी। कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

”अम्मा, क्या गाँधी जी कहीं जा रहे हैं?“ उसने पूछा। खाँसते हुए माँ बोलीं, ”वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।“

”यात्रा? कहाँ जा रहे हैं?“ धनी ने सवाल किया।

”समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बन्द करो और जाओ यहाँ से धनी!“ अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, ”पहले मुझे खाना पकाने दो।“

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिन्दा आलू खोद रहा था।

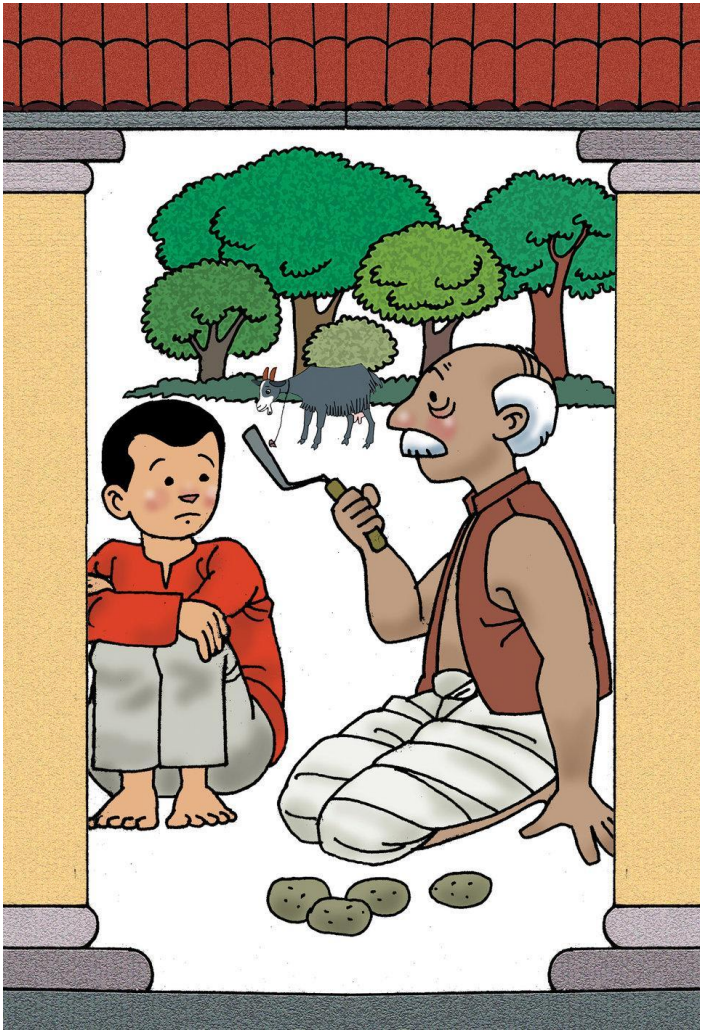

”बिन्दा चाचा,“ धनी उनके पास बैठ गया, ”आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?“
बिन्दा ने सर हिला कर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावला होकर पूछा, ”कौन जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्या हो रहा है?“
बिन्दा ने खोदना रोक दिया और कहा, ”तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस मुई बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!“

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नीबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिन्दा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गाँधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दाँडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दाँडी पहुँच कर वे नमक बनायेंगे।

”नमक?“ धनी चौंक कर उठ बैठा, ”नमक क्यों बनायेंगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।“ ”हाँ, मुझे मालूम है।“ बन्दि़ा हँसा, ”पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?“

”हाँ, बिल्कुल। मैं जानता हूँ वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाये। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं? यह तो बेवकूफ़ी की बात हुई!“

”बिल्कुल बेवकूफ़ी नहीं है धनी! क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर कर देना पड़ता है?“

”तो क्या?“ धनी बुदबुदाया।

”नमक की ज़रूरत सभी को है...इसका मतलब है कि हर भारतवासी, गरीब से गरीब भी, यह कर देता है,“ बन्दि़ा चाचा ने आगे समझाया।

”लेकिन यह तो सरासर नाइंसाफ़ी है!“ धनी की आँखों में गुस्सा था।

”हाँ, यह नाइंसाफ़ी है। यही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिये उन्होंने निश्चय किया है कि वे दाँडी चल कर जायेंगे और समुद्र के पानी से नमक बनायेंगे।“

”एक महीने तक पैदल चलेंगे!“ धनी सोच कर परेशान हो रहा था।

”गाँधी जी तो थक जायेंगे। वे दाँडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते?“

”क्योंकि, यदि वे इस लम्बी यात्रा पर दाँडी तक पैदल जायेंगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फ़ोटो छपेंगी, रेडियो पर रिपोर्ट जायेगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जायेंगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिये यह बड़ी शर्म की बात होगी।“

”गाँधी जी, बड़े ही अक्लमन्द हैं, हैं न?“ धनी की आँखें चमकीं।

"हाँ, वो तो हैं ही!" बिन्दा की आँखों के आस-पास हँसी की लकीरें खिंच गईं, " उन्होंने वायसरॉय को चिट्ठी भी लिखी है कि वे ऐसा करने जा रहे हैं! ब्रिटिश सरकार को तो पता ही नहीं कि उसकी क्या गत बनने वाली है!"

धनी उस झोंपड़ी के पास पहुँचा जहाँ गाँधी जी ठहरे थे। उसने खिड़की से झाँक कर देखा। आश्रम के कई लोग गाँधी जी से बात कर रहे थे। धनी को सुनाई दिया कि वे दाँडी पहुँचने का रास्ता तय कर रहे थे, जिस पर वे पैदल चलेंगे। अपने पिता को भी इनके बीच देखकर धनी खुश हो गया।

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शान्ति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढने निकला। वह बैठ कर चरखा चला रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दाँडी यात्रा पर जा रहे हैं?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

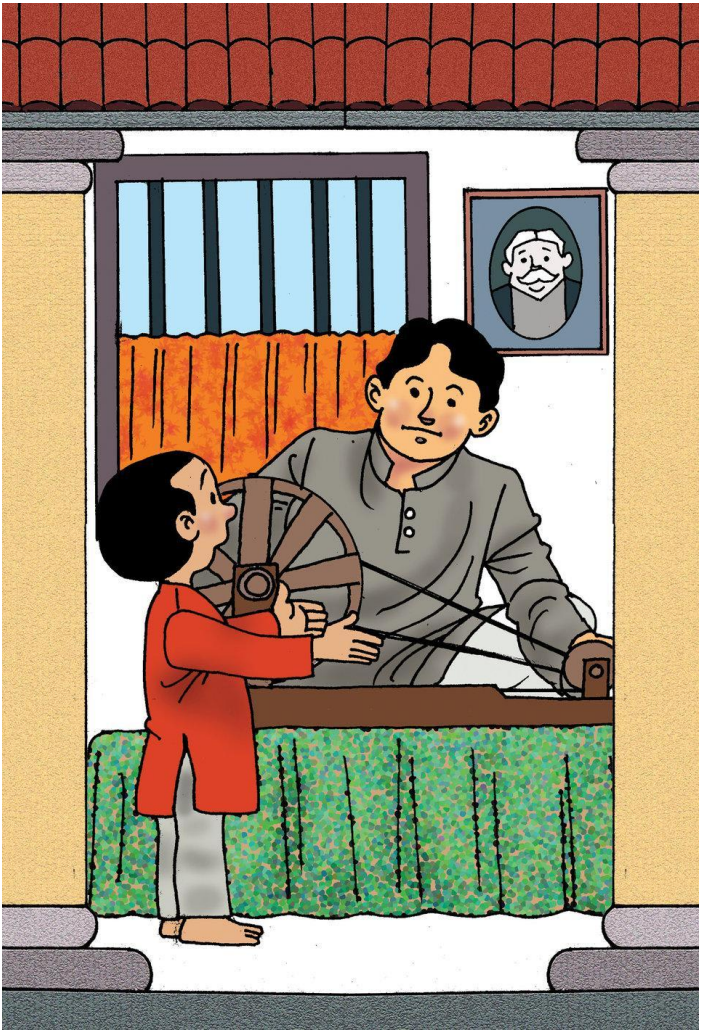

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं आपके साथ आ रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी! तुम इतना लम्बा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

"मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ!" धनी ने हठ पकड़ ली, "आप मुझे साथ आने से रोक नहीं सकते।"

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ़ वे लोग जायेंगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ कहेंगे!" धनी दृढ़ होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

गाँधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा-रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़ कर गाँधी जी को ढूँढने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बन्दगोभी देखते हुए बिन्दा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

अन्त में, गाँधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!" धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?" " धनी, गाँधी जी।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

"जी हाँ, गाँधी जी! मेरी दोस्त बिन्नी, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं," धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा!" गाँधी जी ने हाथ हिलाकर कहा, "अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था," धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दाँडी आ सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला। गाँधी जी मुस्कराये, "तुम अभी छोटे हो बेटा! दाँडी तो 385 किलोमीटर दूर है! सिर्फ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पायेंगे।"

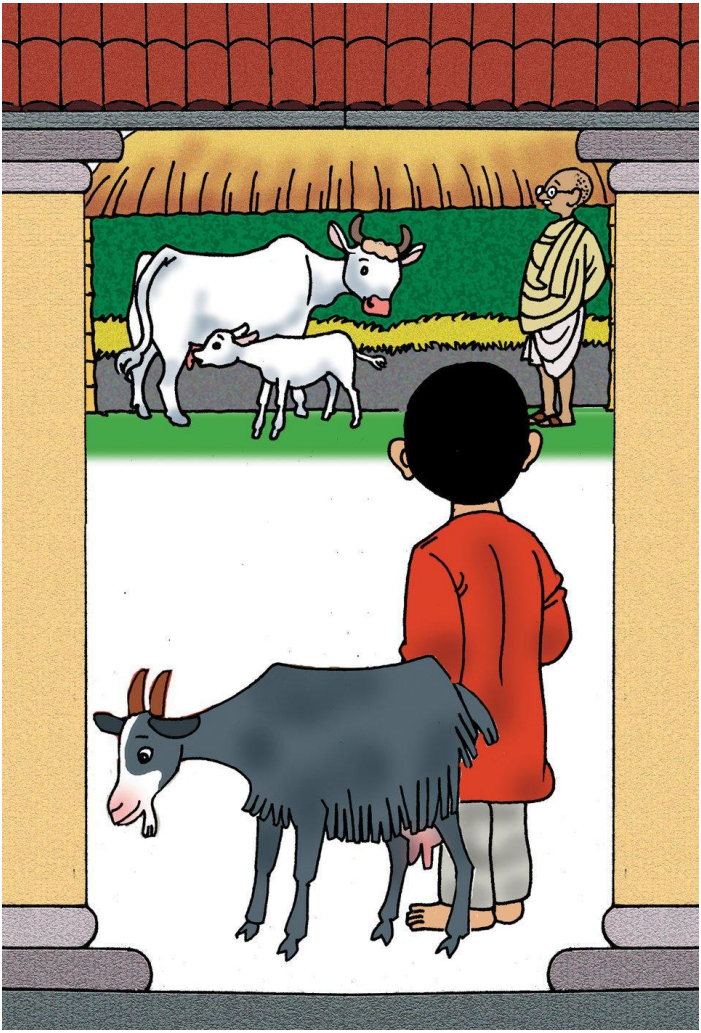

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं," धनी बोला, "आप नहीं थक जायेंगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ," गाँधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ," धनी भी अड़ गया।

"हाँ, ठीक बात है," कुछ सोचकर गाँधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बन्नि को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो जाऊँगा। इसलिये, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आये।"

"हूँ... यह बात तो ठीक है, गाँधी जी! बन्नि तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ," धनी ने प्यार से बन्नि का सर सहलाया, "और सिर्फ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसन्द है।"

"बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रह कर मेरे लिये बन्नि की देखभाल करोगे?" गाँधी जी प्यार से बोले।

"जी, गाँधी जी, करूँगा," धनी बोला, "और बन्नि और मैं, आपका इन्तज़ार करेंगे।
"

इतिहास के कुछ रोचक तथ्य:

1. मार्च 1930 में महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाये नमक कर के विरोध में दाँडी तक की यात्रा का नेतृत्व किया। गाँधी जी और उनके अनुयायी, गुजरात में 24 दिन तक पैदल चले। पूरे रास्ते उनका स्वागत फूलों और गीतों से हुआ। विश्व भर के अखबारों ने यात्रा पर खबरें छापीं।

2. दाँडी में गाँधी जी और उनके साथियों ने समुद्र तट से नमक उठाया और उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ़्तारी के बाद असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ और पूरे भारत में लोगों ने स्कूल, कॉलेज व दफ़्तरों का बायकॉट किया।

3. इस यात्रा में गाँधी जी के साथ 78 स्वेच्छा कर्मियों (वालंटियिरों) ने भाग लिया। उन्होंने 385 किलोमीटर की दूरी तय की।

4. यात्रा 12 मार्च को शुरू होकर 5 अप्रैल, 1930 को समाप्त हुई। सबसे कम उम्र का यात्री 16 वर्ष का था।

5. सन 2005 में दाँडी यात्रा की 75 वीं जयंती थी।

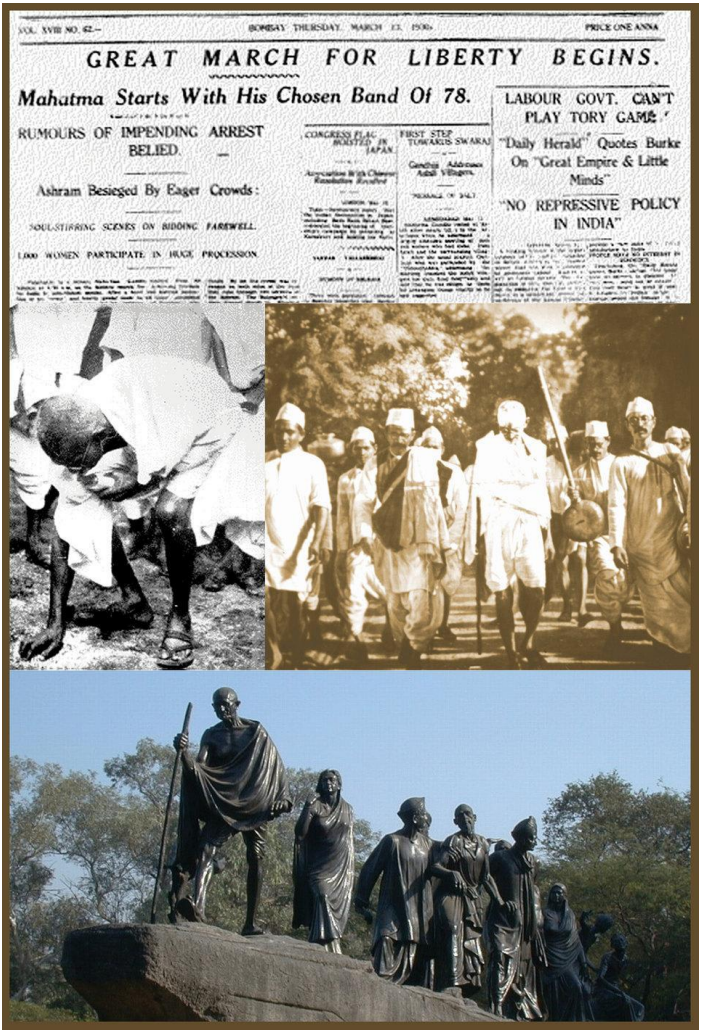

VOL. XVIII NO. 62.— BOMBAY THURSDAY, MARCH 13, 1930. PRICE ONE ANNA

GREAT MARCH FOR LIBERTY BEGINS.

Mahatma Starts With His Chosen Band Of 78.

RUMOURS OF IMPENDING ARREST BELIED.

Ashram Besieged By Eager Crowds:

SOUL-STIRRING SCENES ON BIDDING FAREWELL.

1,000 WOMEN PARTICIPATE IN HUGE PROCESSION.

CONGRESS FLAG HOISTED IN JAPAN.

FIRST STEP TOWARDS SWARAJ

Gandhi Addresses Aslali Villagers.

LABOUR GOVT. CAN'T PLAY TORY GAME

"Daily Herald" Quotes Burke On "Great Empire & Little Minds"

"NO REPRESSIVE POLICY IN INDIA"

PRATHAM BOOKS
storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Story Attribution:

This story: स्वतंत्रता की ओर is translated by Manisha Chaudhry . The © for this translation lies with Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' Marching to Freedom ' , by Subhadra Sen Gupta . © Pratham Books , 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Gandhi and a boy , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Boy watching a goat graze , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Boy and old man with a spade , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Boy watching man spin a charkha , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Boy standing next to a Goat and Gandhi watching a cow and calf , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Gandhi and a boy , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Collage on the Dandi March , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

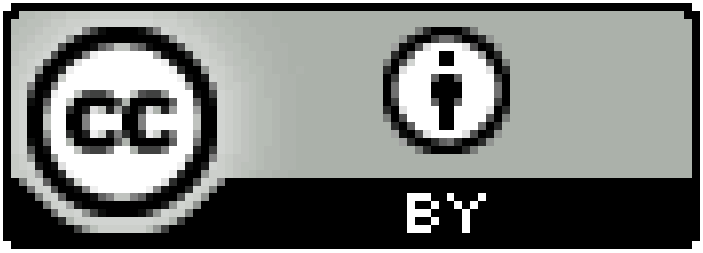

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्वतंत्रता की ओर (Hindi)

नौ वर्ष का धनी साबरमती आश्रम में रहता है। उसने हठ पकड़ ली है कि वह महात्मा गाँधी के साथ दाँडी यात्रा पर जायेगा। अंग्रेजों द्वारा लगाये गये नमक कर का विरोध करेगा। दाँडी यात्रा कि ७५ वीं जयन्ती पर लिखी गयी एक दिलचस्प कहानी!

यह पठन स्तर ४ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो पढ़ने में प्रवीण हैं।

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!